

कोजागिरी व्रत कथा

कोजागिरी व्रत कथा के अनुसार, एक साहूकार की दो बेटियां थीं। दोनों बेटियां पूर्णिमा का व्रत रखती थीं, लेकिन बड़ी बेटी पूरा व्रत रखती थी और छोटी बेटी अधूरा व्रत रखती थी। अधूरे व्रत के कारण छोटी बेटी की संतान पैदा होते ही मर जाती थी। छोटी बेटी ने अपनी यह व्यथा एक ब्राह्मण को बताई, तब उस ब्राह्मण ने उसे शरद पूर्णिमा की पूरी विधि बताई।

इसके बाद साहूकार की छोटी बेटी ने पूरे विधि-विधान से पूर्णिमा का व्रत रखा और इसके पुण्य से उसे संतान की प्राप्ति हुई, लेकिन कुछ दिन बाद वह भी मर गया। उसने बालक को एक चौकी पर लिटाकर कपड़े से ढक दिया और फिर बड़ी बहन को बुलाकर घर ले आई और उसे वही चौकी बैठने को दे दी।

बड़ी बहन जब उस पर बैठने लगी तो उसका लहंगा बालक को छू गया। लहंगे के छूते ही बालक रोने लगा। तब बड़ी बहन ने कहा कि तुम मुझे बदनाम करना चाहती थी। अगर मैं इस पर बैठती तो वह मर जाता। तब छोटी बहन ने कहा कि वह तो पहले ही मर चुका है। तेरे भाग्य से ही वह जीवित हुआ है। तेरे पुण्य से ही वह जीवित हुआ है। उसके बाद साहूकार की छोटी बेटी ने नगर में मुनादी करवा दी कि पूर्णिमा का पूरा व्रत करो। तब से यह दिन एक त्यौहार के रूप में मनाया जाने लगा और माता लक्ष्मी की पूजा की जाने लगी।